शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.8777 (SJIF)

कुशीनगर जनपद (उ०प्र०) में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का वितरण एवं परिवर्तन

प्राप्तिः 15.05.2024
स्वीकृतः 27.06.2024

डॉ० विनय कुमार यादव
इमेलः *vinayyadav1217@gmail.com*

41

भूमि उपयोग का स्वरूप मानव सभ्यता के विकास और मानव की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित, परिकृत एवं परिमार्जित होता रहा है। यह परिवर्तन कृषि विकास और उसकी अवस्थाओं के रूप में परिलक्षित हुआ है और होता रहेगा। कृषि कार्य की विविधता एवं विशिष्टता भूमि उपयोग के उस विकास कार्य एवं क्रम को व्यक्त करती है, जो व्यक्ति के जीवनयापन की आवश्यकताओं से लेकर उसके आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास को पूर्णतया प्रभावित किये हुए हैं। भारत जैसे कृषि प्रधान देश के जन–जीवन में भूमि उपयोग का मुख्य अर्थ कृषि कार्य से है, जो ग्रामीण क्षेत्र के संविकास की कुंजी है। मानव पृथ्वी पर अपनी उत्पत्ति के साथ अपने जीवन–आधार, निर्वहन एवं स्थायित्व के लिये भूमि पर ही निर्भर है। भोजन एवं आवास के लिये भूमि पर मानव की इसी अनन्य निर्भरता के कारण ही उसे 'माटी का सपूत' कहा जाता है। मानव द्वारा भूमि संसाधन के सामंजस्यपूर्ण उपयोग पर ही मानव एवं उसके समाज की खुशहाली निर्भर है, जबकि पेट की भूख निश्चित तौर पर मानव समाज के लिये एक चुनौती है। इसीलिये संसाधनों के उचित दोहन के लिये भूमि की वर्तमान क्षमता का आकलन करना आवश्यक होता है (Giri, H.H., 1976, p.IX)।

आधुनिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में सभी उपलब्ध संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग को ध्यान में रखते हुए सतत नवीन तकनीकी ज्ञान एवं संयन्त्रों का अनुसंधान एवं विकास किया जा रहा है। भूमि उपयोग भी इस वैज्ञानिक युग की उपलब्धियों से पूर्णतया प्रभावित है। (Vennzetti C. 1972, pp. 1105-1106) के अनुसार 'भूमि उपयोग' प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक उपादानों के संयोग का प्रतिफल है। जब तक किसी क्षेत्र विशेष में भूमि उपयोग प्रकृति प्रदत्त विशेषताओं के अनुरूप रहता है, अर्थात मानवीय क्रिया–कलाप प्राकृतिक कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं, तब तक भूमि का आर्थिक महत्व कम एवं मानव का जीवन स्तर निम्न होता है। कालक्रम में जब भूमि उपयोग प्रारूप के निर्धारण में मानवीय भूमिका निर्णायक हो जाती है एवं भूमि उपयोग में आर्थिक संसाधनों का विनियोजन अधिक होने लगता है, तब उस अवस्था में भूमि की संसाधनता में वृद्धि हो जाती है और मानव जीवन का आर्थिक स्तर अपेक्षाकृत उच्च हो जाता है। चूंकि प्राकृतिक एवं मानवीय कारकों की अनुकूलता के फलस्वरूप इस जनपद की अधिकाधिक भूमि का उपयोग गहन फसलोत्पादन में किया जाता है। यदि कुल कृषिगत भूमि को 100 प्रतिशत मान

लिया जाय तो इसमें शुद्ध बोयी गयी भूमि का अंश सर्वाधिक (97.86 प्रतिशत) है। परती भूमि का अंश अत्यल्प (1.68 प्रतिशत) है। इसलिए कुल कृषि भूमि के परिवर्तन और क्षेत्रीय वितरण का प्रतिरूप बहुत हद तक शुद्ध बोये गये क्षेत्र के अनुरूप मिलता है।

अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के धुर पुर्वोत्तर में 26^0 34′ उत्तर से 27^0 17′ उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 32′ पूर्व से 84^0 15′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है (चित्र संख्या–1)। यह उत्तर–प्रदेश के पूर्वी सीमांत का एक जनपद (कुशीनगर) है जो बिहार राज्य से संलग्न स्थित है। इस जनपद (अध्ययन क्षेत्र) की पूर्वी सीमा बिहार राज्य, दक्षिणी सीमा उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद, द०प० सीमा उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद एवं उ०प० सीमा उत्तर प्रदेश के ही महराजगंज जनपद की सीमा से निर्धारित होती है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2906 वर्ग किमी० है। शान्ति एवं अहिंसा के पुजारी भगवान बुद्ध एवं महावीर स्वामी की परिनिर्वाण स्थली क्रमशः कुशीनगर एवं पावानगर इसी जनपद में है।

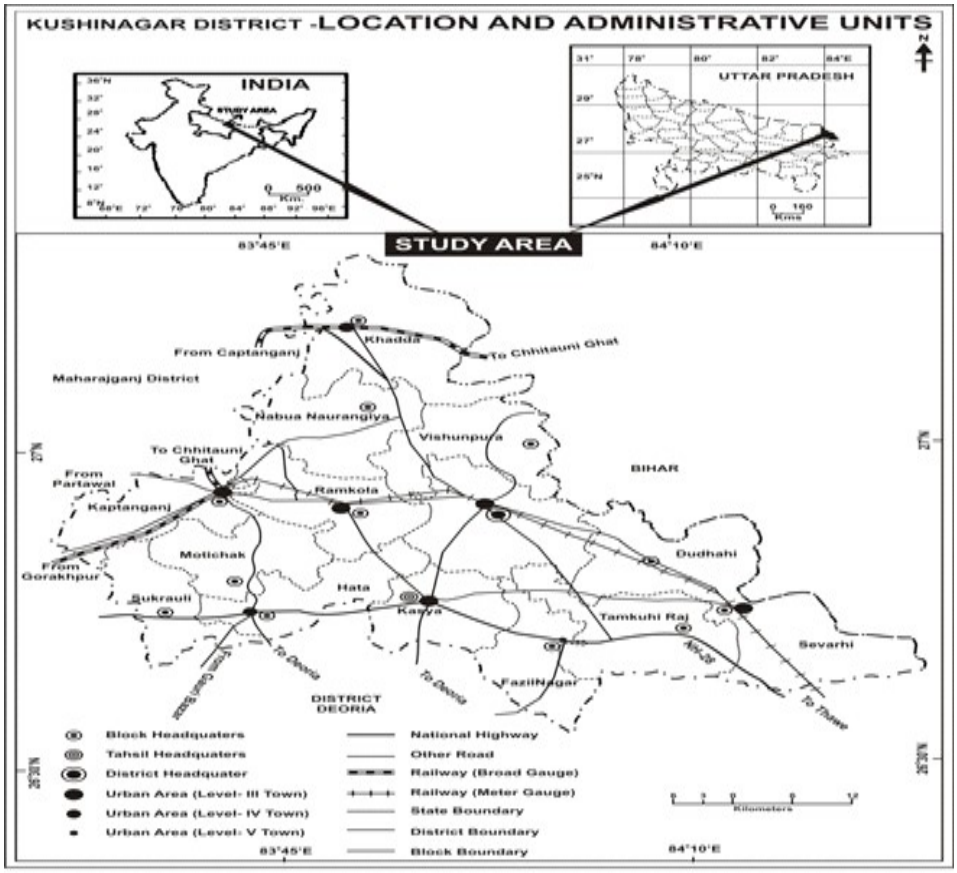

चित्र संख्या–1

शुद्ध बोये गये क्षेत्र का तात्पर्य कृषिगत भूमि के उस भाग से है, जो किसी फसली वर्ष में वास्तव में बोया गया हो। इसीलिये इसके लिए शुद्ध फसलगत भूमि, शुद्ध बोयी गयी भूमि या शुद्ध

कृषित भूमि शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। शुद्ध बोयी गयी भूमि सम्पूर्ण क्षेत्रफल तथा भूमि उपयोग के शेष सभी (श्रेणी 1 से 8 तक) श्रेणियों की भूमि के योग के अन्तर का द्योतक होती है (Singh Jasbir,1974 105)। इस प्रकार इस श्रेणी में फसल तथा फसलोत्पादन के रूप में शुद्ध बोये गये क्षेत्र को सम्मिलित किया जाता है। ज्ञातव्य है कि एक बार से अधिक बोये गये क्षेत्र की गणना भी एक बार ही की जाती है। यह कुल बोये गये क्षेत्र से कम होता है, क्योंकि कुल बोया गया क्षेत्र, शुद्ध बोये गये क्षेत्र तथा एक बार से अधिक बोये गये क्षेत्र का योग होता है।

भूमि उपयोग के अन्तर्गत शुद्ध बोये गया क्षेत्र भूमि उपयोग का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है। कृषि प्रधान देश यथा भारत के लिये शुद्ध बोये क्षेत्र का विशेष महत्व है, क्योंकि कृषि उत्पादन इसी श्रेणी की भूमि पर आधारित होता है। निरन्तर तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या की वृद्धिमान खाद्य एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शुद्ध बोये गये क्षेत्र में वृद्धि तात्कालिक आवश्यकता है (खुल्लर,डी0आर0, 2015, पेज–545)। अध्ययन क्षेत्र में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में अभिवृद्धि की सम्भावना या गुंजाइश नहीं है, क्योंकि शुद्ध कृषिगत क्षेत्र अपनी अधिकतम सीमा तक पहुँचने के बाद अब ह्रासमान स्थिति में आ गया है। एक ओर तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति कृषिगत भूमि का अनुपात निरन्तर घटता जा रहा है, तो दूसरी ओर गैर–कृषि कार्यों का विस्तार कृषिगत भूमि पर होते जाने से भी शुद्ध बोये गये क्षेत्र में ह्रास की प्रवृत्ति परिलक्षित होने लगी है। बढ़ती हुई जनसंख्या की विविध आवश्यकताओं की अधिकांश पूर्ति कृषिगत भूमि से ही होनी है, अतः इस भूमि का सम्यक और सुविचारित उपयोग अपरिहार्य है। इसके उपयोग की विभिन्न अवस्थाएँ–सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास स्तर की परिचायक हैं। सदियों से अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कृषि पर ही अवलम्बित रही है। मानसूनी जलवायु, जलोढ़ निर्मित उर्वर एवं अत्यन्त समतल मैदान, उच्च जनसंख्या घनत्व, प्रचुर जल की उपलब्धि, पर्याप्त तापमान आदि कारणों से शुद्ध बोये गये क्षेत्र का अधिक होना स्वाभाविक है।

तालिका – 1 कुशीनगर जनपद : शुद्ध बोया गया क्षेत्र

विकास खण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र			शुद्ध बोया गया क्षेत्र हे0में			प्रतिशत में			परिवर्तन		
	1975	1995	2018	1975	1995	2018	1975	1995	2018	1975.95	1995.18	1975.18
कप्तानगंज	17974	17560	18030	14345	13857	14538	79.81	78.91	80.63	–3.40	4.91	1.35
रामकोला	20594	20571	23497	16673	15953	17645	80.96	77.55	75.09	–4.32	10.61	5.83
मोतीचक	15919	16119	18203	13548	12347	13984	85.11	76.60	76.82	–8.86	13.26	3.22
सुकरौली	15521	15579	15013	13674	11391	12750	88.10	73.12	84.93	–16.70	11.93	–6.76
हाटा	16038	16009	16809	14471	11950	13845	90.23	74.65	82.37	–17.42	15.86	–4.33
खड्डा	40784	32417	33262	27889	26003	19513	68.38	80.21	58.66	–6.76	–24.96	–30.03
नेबुआ नौ0	13173	20570	20057	7864	12377	16072	59.70	60.17	80.13	57.39	29.85	104.37
विशुनपुरा	22467	22172	22570	19216	17799	18498	85.53	80.28	81.96	–7.37	3.93	–3.74
पडरौना	28487	27902	28212	23988	21462	22314	84.21	76.92	79.09	–10.53	3.97	.6.98

पडरौना	28487	27902	28212	23988	21462	22314	84.21	76.92	79.09	−10.53	3.97	.6.98
कसया	18961	12015	14893	16047	8761	12142	84.63	72.92	81.53	.45.40	38.59	−24.33
दुदही	24051	23770	21086	17752	17874	16792	73.81	75.20	79.64	0.69	−6.05	−5.41
फाजिल0	15956	15846	15562	13219	11973	12136	82.85	75.56	77.98	−9.43	1.36	−8.19
तमकुही	19642	20091	19001	16956	15908	14891	86.33	79.18	78.37	−6.18	−6.39	−12.18
सेवरही	22866	22368	23809	17904	17299	18099	78.30	77.34	76.02	−3.38	4.62	1.09
योग	292433	282989	290004	233546	214954	223219	79.86	75.96	76.97	−7.96	3.85	−4.42

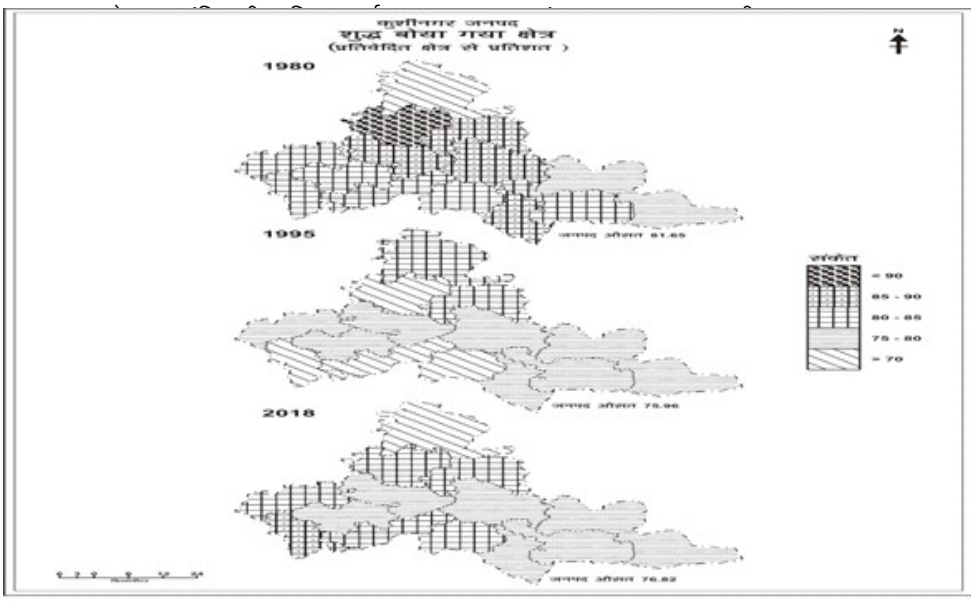

चित्र संख्या–2

वर्ष 2018 के आकड़ों के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 223896 हेक्टेयर है जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 76.82 प्रतिशत है। यह भारत के औसत 46.28 प्रतिशत के डेढ़ गुने से अधिक तथा उत्तर प्रदेश के औसत 68.46 प्रतिशत से 8 प्रतिशत अधिक है। दो दशक पूर्व 1995 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 75.96 प्रतिशत (214954 हेक्टेयर) तथा चार दशक पूर्व 1975 में 79.65 प्रतिशत (233546 हेक्टेयर) था। इस प्रकार पूर्वार्द्ध के दो दशको में 3.69 प्रतिशत का ह्रास जबकि उत्तरार्द्ध के दो दशकों में मामूली (0.86 प्रतिशत) वृद्धि तथा विगत 4 दशकों में औसत 2.83 प्रतिशत की कमी आयी है। वर्ष 1980 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र अपनी अधिकतम सीमा 81.65 प्रतिशत पर था इसके पश्चात 1990 में घटकर 78.48 प्रतिशत और 1995 में 75.96 प्रतिशत हो गया। इसके बाद वर्ष 2000 में किंचित वृद्धि के साथ शुद्ध बोया गया क्षेत्र 78.19 प्रतिशत हो गया परंतु, पुनः कम होकर वर्ष 2005 में 76.7 प्रतिशत हो गया। पुनः शुद्ध बोया गया क्षेत्र किंचित वृद्धि के साथ वर्ष 2010 में 77.42 प्रतिशत

हुआ परन्तु किंचित हास के फलस्वरूप 2018 में 76.82 प्रतिशत हो गया। कुल मिलाकर मामूली घट बढ़ के साथ 1980 के पश्चात शुद्ध बोया गया क्षेत्र वास्तव में कम हो रहा है। फिर भी शुद्ध बोये गये क्षेत्र का इतना ऊँचा प्रतिशत कम ही क्षेत्रों में पाया जाता है। मानसूनी जलवायु, जलोढ़ रचित अत्यन्त समतल मैदान, उपजाऊ मिट्टी, वर्ष भर प्रचुर तापमान, प्रचुर धरातलीय एवं भूगर्भ जल तथा अत्यंत सघन जनसंख्या वाले अध्ययन क्षेत्र के संपूर्ण अर्थ तंत्र की आधारशिला प्रारंभ से ही कृषि रही है। शुद्ध बोये गये क्षेत्र का सापेक्ष एवं निरपेक्ष दोनों रूपों में अधिक होना स्वाभाविक है।

शुद्ध बोये गये क्षेत्र में परिवर्तन के साथ ही साथ उसके क्षेत्रीय वितरण में सदैव असमानता रही है। वर्ष 2018 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र के वितरण में क्षेत्रीय असमानता 26.89 प्रतिशत तक मिलती है। उदाहरण के लिए एक और सुकरौली विकास खण्ड में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 85.56 प्रतिशत अधिकतम है तो दूसरी ओर उत्तरी छोर के खड्डा विकास खण्ड में 58.67 प्रतिशत न्यूनतम है। वस्तुतः खड्डा को छोड़कर अन्य विकास खण्डों की शुद्ध कृषि भूमि में बहुत अधिक अन्तर नहीं है। क्योंकि अन्य विकास खण्डों में न्यूनतम शुद्ध बोया गया क्षेत्र 75.14 प्रतिशत (रामकोला) तथा अधिकतम शुद्ध बोया गया क्षेत्र 85.56 प्रतिशत (सुकरौली) है। खड्डा में शुद्ध बोया गया क्षेत्र तुलनात्मक दृष्टि से बहुत कम होने के कारण ही 78.57 प्रतिशत विकास खण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र जनपद औसत से अधिक है। 21.43 प्रतिशत विकास खण्डों में ही औसत से कम है, जिन 11 विकास खण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र औसत से अधिक है उनमें सुकरौली विकास खण्ड में 85.56 प्रतिशत है। 5 विकास खण्डों कप्तानगंज हाटा, नेबुआ नौरंगिया, विशुनपुरा एवं कसया में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 80 से 85 प्रतिशत के बीच मिलता है। क्षेत्र के 50 प्रतिशत विकास खण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र औसत के आस पास अर्थात 75–80 प्रतिशत के मध्य मिलता है। इसमें रामकोला, मोतीचक, पड़रौना, दुदही, फाजिलनगर, तमकुही और सेवरही विकास खण्ड आते है। सबसे निचली श्रेणी में खड्डा विकास खण्ड (58.67) आता है।

18 वर्ष पूर्व शुद्ध बोये गये क्षेत्र के अनुपात में कालिक परिवर्तन होने रहते के साथ ही उसके क्षेत्रीय वितरण के स्वरूप में भी परिवर्तन की प्रवृत्ति रही है। वर्ष 2000 में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत 78.1 था। तत्समय शुद्ध बोये गये क्षेत्र के अधिकतम एवं न्यूनतम प्रतिशत में 33.12 का अन्तर है। जबकि 2018 में यह 26.89 प्रतिशत का था। उस समय एक ओर सुकरौली विकास खण्ड में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 87.80 प्रतिशत था तो दूसरी खड्डा विकासखण्ड में 54.62 प्रतिशत न्यूनतम था। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 की तरह 2000 में भी सुकरौली विकास खण्ड में अधिकतम और खड्डा में न्यूनतम शुद्ध बोया गया क्षेत्र था। खड्डा में कृषि भूमि में कुछ वृद्धि तथा सुकरौली विकास खण्ड में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में कुछ कमी होने के कारण शुद्ध बोये गये क्षेत्र में क्षेत्रीय विषमता कम हुई है।वर्ष 2000 में शुद्ध बोये गये क्षेत्र के अधिकतम और न्यूनतम प्रतिशत के मध्य अन्तराल 2018 की तुलना में अधिक था, परन्तु जनपद औसत से अधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्र वर्ष 2018 में 11 तथा 2000 में 10 विकासखण्डों में था। तालिका–1 से स्पष्ट है कि शुद्ध बोये गये क्षेत्र के अति उच्च और अति निम्न श्रेणियों में विकास खण्डों की संख्या में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

केवल मध्यम और निम्न श्रेणियों में विकासखण्डो की संख्या में परिवर्तन हुआ है। तात्पर्य यह कि इन 18 वर्षों में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में परिवर्तन की मात्रा कम रही है।

वर्ष 1990 में भी शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत खड्डा में (54.76 प्रतिशत) था। परन्तु अधिकतम शुद्ध बोये गया क्षेत्र रामकोला विकासखण्ड में था। उस समय औसत से अधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्र 14 में से 12 विकासखण्डों में था। ऐसी स्थिति इस कारण उत्पन्न हुई है कि केवल एक विकासखण्ड खड्डा में अन्यों की तुलना में शुद्ध बोया गया क्षेत्र बहुत कम था। 14 में से केवल 4 विकासखण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 80 प्रतिशत से कम था, परंतु खड्डा को छोड़कर उनमें जनपद औसत के आस–पास था। जिन 10 विकासखण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 80 प्रतिशत से अधिक था उनमें शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत 80 से 86 के मध्य था। रामकोला विकासखण्ड को छोड़कर विशुनपुरा, नेबुआ नौरंगिया, सुकरौली मोतीचक, कप्तानगंज, फाजिलनगर, पडरौना, कसया विकासखण्डों में 2018 की ही तरह शुद्ध बोया गया क्षेत्र अपेक्षकृत उच्च था।

वर्ष 1975 से 2018 के मध्य वर्ष 1980 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र सर्वाधिक (81.65 प्रतिशत) था। 2018 की तुलना में इस वर्ष में अधिकतम और न्यूनतम प्रतिशत के मध्य अंतर (28.72) अधिक था। इस वर्ष सर्वाधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्र नेबुआ नौरंगिया में 90.04 प्रतिशत तथा सबसे कम शुद्ध बोया गया क्षेत्र खड्डा में 61.62 प्रतिशत था। 1980 से अब तक की अवधि में शुद्ध बोया गया क्षेत्र हमेशा खड्डा विकासखण्ड में ही न्यूनतम रहा है, जबकि अधिकतम बोये गये क्षेत्र वाला विकासखण्ड बदलता रहा है। वर्ष 1980 में भी कुल 14 विकासखण्डों में से केवल खड्डा विकास खण्ड में ही शुद्ध बोया गया क्षेत्र अपेक्षाकृत बहुत कम था। जनपद औसत 81.65 प्रतिशत की तुलना में यहाँ शुद्ध बोया गया क्षेत्र 61.32 प्रतिशत ही था। शेष विकासखण्डों में शुद्ध बोयी गयी भूमि जनपद औसत से इतनी कम नहीं थी। यही कारण है कि तत्समय 78.5 प्रतिशत विकासखण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र जनपद औसत से अधिक था। जिनमें नेबुआ नौरंगिया, रामकोला, पडरौना, फाजिलनगर, कसया, मोतीचक उल्लेखनीय विकासखण्ड हैं। जिन 3 विकासखण्डों में जनपद औसत से कम शुद्ध बोया गया क्षेत्र है, उनमें खड्डा को छोड़ दिया जाय तो शेष सेवरही (79.04 प्रतिशत) एवं दुदहीं (78.41 प्रतिशत) में शुद्ध बोया गया क्षेत्र जनपद औसत के निकट है।

परिवर्तन विगत चार दशकों में भिन्न–भिन्न वर्षों के आँकड़ों से प्रकट है कि शुद्ध बोया गया क्षेत्र (1984 को छोड़कर) कुछ घटबढ़ कं साथ 75 से 80 प्रतिशत के बीच बना हुआ है। उदाहरण के लिए शुद्ध बोया गया क्षेत्र 1975 में 79.65, 1980में 81.65, 1990 में 78.48 और 2018 में 76.82 प्रतिशत रहा। चूँकि अध्ययन क्षेत्र में शुद्ध बोया गया क्षेत्र पहले से ही अधिक रहा है तथा विस्तार की अपनीं अधिकतम सीमा को प्राप्त कर चुका है, इसलिए अब इसमें विस्तार की सम्भावना नहीं है। वर्ष 1980 के पश्चात शुद्ध बोये गये क्षेत्र में ह्रास की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। वर्ष 1975 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 233546 हेक्टेयर था, जबकि दो दशक बाद किंचित कम होकर 1995 में 214954 हेक्टे0 हो गया। इस प्रकार इन 20 वर्षों में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में 18592 हेक्टे0 की शुद्ध कमी आयी। इसीलिए कुल प्रतिवेदित क्षेत्र में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत 1975 में 79.65 प्रतिशत से किंचित घटकर 1995

में 75.96 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार इन दो दशकों की अवधि में 7.96 प्रतिशत का ह्रास हुआ। उल्लेखनींय है कि नेंबुआ नौरंगिया और दुदहीं दो विकासखण्डों में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में न्यूनाधिक वृद्धि हुई। दुदहीं में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 73.81 प्रतिशत से बढ़कर 75.2 प्रतिशत हो गया। इसमें 122 हेक्टेयर की शुद्ध एवं 0.96 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उत्तरी भाग स्थित नेंबुआ नौरंगिया में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 1975 में 7864 हेक्टेयर से बढ़कर 1995 में 12377 हेक्टेयर हो गया। इसमें 57.39 प्रतिशत की वृद्धि हुई। यहाँ शुद्ध वृद्धि और प्रतिशत वृद्धि दोनों अधिक है, फिर भी शुद्ध बोये गये क्षेत्र में मामूली वृद्धि (59.70 से बढ़कर 60.17 प्रतिशत) परिलक्षित होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि शुद्ध बोये गये क्षेत्र में वृद्धि के साथ ही इस विकास खण्ड के प्रतिवेदित क्षेत्र में वृद्धि हुई जिसके सन्दर्भ में परिकलित प्रतिशत कम आया है। क्षेत्र के 85.71 प्रतिशत विकास खण्डों के शुद्ध बोये गये क्षेत्र में इस अवधि में कमी आयी। यह कमी 50 प्रतिशत विकास खण्डों में औसत से अधिक एवं 50 प्रतिशत विकास विकासखण्डों में औसत से कम रही। कसया (45.4 प्रतिशत), हाटा (17.4 प्रतिशत), सुकरौली (16.7 प्रतिशत), फाजिललगर (9.43 प्रतिशत) विकास खण्डों मे अपेक्षाकृत अधिक ह्रास हुआ है। ये सभी विकास खण्ड क्षेत्र के दक्षिणी सीमावर्ती भाग में राष्ट्रीय राजमार्ग 28 के किनारे स्थित हैं। मध्य उत्तरी पूर्वी भाग के विकास खण्डों में भी उल्लेखनीय ह्रास की प्रवृत्ति मिलती है। पड़रौना (जिला मुख्यालय), कसया, फाजिलनगर में नगरीय प्रसार के कारण शुद्ध बोये गये क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक कमी आयी है। इन दो दशकों की अवधि (1975–1995) में आयी कमी के फलस्वरूप शुद्ध बोया गया क्षेत्र घटकर कसया में 84.63 से 72.92 प्रतिशत, पड़रौना में 84.21 प्रतिशत से घटकर 76.92 प्रतिशत, फाजिलनगर में 82.85 से 75.56, सुकरौली में 88.1 से 73.12 प्रतिशत एवं हाटा में 90.23 प्रतिशत से 74.65 प्रतिशत हो गया।

विगत 4 दशकों के उत्तरार्द्ध (1995–2018) में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में हास न होकर किंचित वृद्धि (3.85 प्रतिशत) हुई है। 1995 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 75.96 प्रतिशत (214954 हेक्टेअर) से मामूली वृद्धि के साथ 76.82 प्रतिशत (223896 हेक्टेअर) हो गया। अध्ययन क्षेत्र में शुद्ध बोया गया क्षेत्र में औसतन वृद्धि (3.85 प्रतिशत) की ही भाँति अधिकांश विकास खण्डों (78.57 प्रतिशत) में शुद्ध बोया गया क्षेत्र न्यूनाधिक बढ़ा है, जबकि 1975 से 1995 के मध्य अधिकांश विकास खण्डो (71.43 प्रतिशत) में शुद्ध बोया गया क्षेत्र कम हुआा था। तमकुही, दुदही और खड्डा तीन विकास खण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र जनपद औसत के विपरीत घटा है। तमकुही विकास खण्ड में यह हास 6.39 प्रतिशत दुदही में 6.05 प्रतिशत एवं खड्डा विकास खण्ड में 4.96 प्रतिशत रहा। इस अवधि से शुद्ध बोये गये क्षेत्र में सर्वाधिक वृद्धि कसया विकास खण्ड (38.59 प्रतिशत) में हुई, जहाँ शुद्ध बोया गया क्षेत्र 8761 हेक्टेअर से बढ़कर 12152 हेक्टेयर हो गया। यहाँ 3391 हेक्टेयर की शुद्ध वृद्धि के फलस्वरूप शुद्ध बोया गया क्षेत्र 72.92 प्रतिशत से बढ़कर 81.81 प्रतिशत हो गया। कसया के पश्चात शुद्ध बोये गये क्षेत्र में अधिक वृद्धि नेबुआ नौरंगिया विकास खण्ड (29.85) में हुई जहाँ शुद्ध बोया गया क्षेत्र 12377 हेक्टेयर से बढ़कर 16082 हेक्टेयर हो गया। यहाँ 3705 हेक्टेयर की शुद्ध वृद्धि के फलस्वरूप शुद्ध बोया गया क्षेत्र 60.17 प्रतिशत से बढ़कर 80.2 प्रतिशत हो गया।

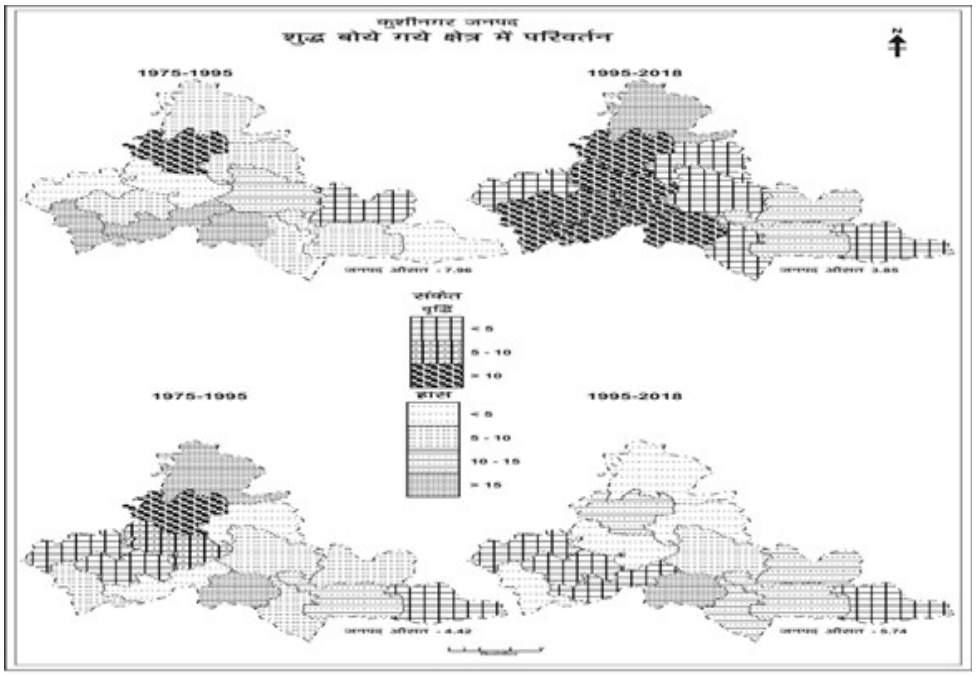

चित्र संख्या–3

इसी प्रकार हाटा (15.86 प्रतिशत), मोतीचक (13.26 प्रतिशत), रामकोला (10.61 प्रतिशत) विकास खण्डों में भी हुआ है। ये सभी विकास खण्ड क्षेत्र के दक्षिणी पश्चिमी भाग में स्थित हैं। पूर्वी भाग के विकास खण्डों विशुनपुरा, पड़रौना, सेवरही में मामूली वृद्धि हुई है। तमकुही, दुदही और खड्डा इन्हीं विकास खण्डों से संलग्न स्थित है। जहाँ शुद्ध बोये गये क्षेत्र में हास हुआ है। यहाँ इस तथ्य की ओर संकेत करना आवश्यक है कि दुदहीं विकास खण्ड में शुद्ध बोया गया क्षेत्र वास्तव में घटा है परन्तु शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत 1995 में 75.2 प्रतिशत से बढ़कर 2018 में 79.64 प्रतिशत हो गया है। यह विरोधाभास वस्तुतः इस कारण प्रकट हुआ है कि दुदहीं विकास खण्ड का कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 1995 (23770 हेक्टेअर) की तुलना में 2018 में कम (21086 हेक्टेअर) हो गया है। इस लिए कुल प्रतिवेदित क्षेत्र की तुलना में परिकलित शुद्ध बोया गया क्षेत्र का प्रतिशत 2018 में अधिक आया है। रामकोला और सेवरही विकास खण्डों की शुद्ध बोयी गयी भूमि का प्रतिशत कम हुआ है जबकि वास्तव में इन विकास खण्डों की शुद्ध बोयी गयी भूमि में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए रामकोला में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 1995 में 15953 हेक्टेयर से बढ़कर 2018 में 17655 हेक्टेयर हुआ है परन्तु शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत 77.55 प्रतिशत से घटकर 2018 में 75.14 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार सेवरही में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 1995 में 17299 से बढ़कर 2018 में 18109 हेक्टेयर हो गया, परन्तु शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत 77.34 से घटकर 76.10

प्रतिशत हो गया। वस्तुतः इन दोनों विकास खण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र तो बढ़ा है परंतु उस अनुपात में नहीं बढ़ा है, जिस अनुपात में प्रतिवेदित क्षेत्र बढ़ा है। प्रतिवेदित क्षेत्रफल 1995 की अपेक्षा 2018 में अधिक हुआ है। इसीलिए बढ़े हुए प्रतिवेदित क्षेत्र के सन्दर्भ में परिकलित शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत कम हुआ है।

उपर्युक्त विवेचन से प्रकट है कि शुद्ध बोये गये क्षेत्र में विगत चार दशकों (1975–2018) के अन्तर्गत वृद्धि व ह्रास दोनों की प्रवृत्ति रही है। परंतु 1975 (233546 हेक्टेयर) के सापेक्ष 2018 (223896 हेक्टेयर) में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में 1650 हेक्टेअर की शुद्ध कमी हुई है अथवा 4.42 प्रतिशत का अल्प हास हुआ है। यही कारण है कि कुल प्रतिवेदित क्षेत्र में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत 1975 में 79.86 से घटकर 2018 में 76.82 हो गया। इन 43 वर्षों में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में औसत रूप से यद्यपि ह्रास हुआ है, परन्तु सभी भागों में ऐसा नहीं है। वस्तुतः कुल 14 विकास खण्डों में से एक ओर 9 विकास खण्ड की शुद्ध बोयी गयी भूमि में ह्रास हुआ है, परन्तु इसके विपरीत दूसरी ओर 5 विकास खण्डों की शुद्ध बोई गयी भूमि में न्यूनाधिक वृद्धि हुई है।

जिन 9 विकास खण्डों में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में कमी आयी है उनमें तीन विकास खण्डों में अपेक्षाकृत अधिक हास हुआ है। उत्तरी भाग के खड्डा विकास खण्ड में जनपद औसत की तुलना में लगभग 7 गुनी (30.03 प्रतिशत) दक्षिणी भाग में स्थित, कसया विकास खण्ड में 5 गुना (24.33 प्रतिशत) एवं तमकुही में लगभग तीन गुनी (12.18 प्रतिशत) कमी आयी है। फलतः इस विकास खण्डों में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत कम होकर क्रमशः 68.38 से 58.67, 84.63 से 81.81 तथा 86.33 से 78.39 हो गया। सुकरौली, पड़रौना, दुदहीं, फाजिलनगर विकास खण्डों में ह्रास का प्रतिशत जनपद औसत से अधिक है। परन्तु 5 से 8 प्रतिशत के आस पास है। विशुनपुरा (3.74 प्रतिशत) एवं हाटा (4.33 प्रतिशत) में ही औसत से कम ह्रास हुआ है।

वर्ष 1975 की तुलना में 2018 में शुद्ध बोये क्षेत्र में 5 विकास खण्डों वृद्धि हुई है। सर्वाधिक वृद्धि (104.37 प्रतिशत) नेबुआ नौरंगिया विकास खण्ड में हुई है। यहाँ शुद्ध बोया गया क्षेत्र 1975 में 7864 हेक्टेअर से बढ़कर 2018 में 16082 हेक्टेअर हो गया है। फलतः कुल प्रतिवेदित क्षेत्र में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत 59.70 से बढ़कर 80.20 हो गया। यहाँ उल्लेखनीय है कि कप्तानगंज, रामकोला, मोतीचक, सेवरही और नेबुआ नौरंगिया विकास खण्डों में संयुक्त रूप से इस अवधि में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में कुल 10055 हेक्टेअर की वृद्धि हुई जिसमें से अकेले नेबुआ नौरंगिया में 8218 हेक्टेयर (81.73 प्रतिशत) वृद्धि हुई। स्पष्ट है कि अन्य चार विकास खण्डों में बहुत कम वृद्धि हुई है। रामकोला में 5.83 प्रतिशत मोतीचक में 3.22 प्रतिशत, कप्तानगंज में 1.35 प्रतिशत और सेवरही में 1. 09 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई है।

शुद्ध बोये गये क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन को देखते हुए निष्कर्ष प्राप्त होता है कि वर्ष 1980 तक शुद्ध बोये गये क्षेत्र में वृद्धि की प्रवृत्ति मिलती है। इसके बाद कुछ वर्षों तक मामूली घटबढ़ के साथ लगभग स्थिरता की स्थिति रही। वस्तुतः 1990 के बाद से ही मामूली घटबढ़ के साथ शुद्ध बोये गये क्षेत्र में हास की प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई जो अब तक बनी हुई है।

शुद्ध कृषित भूमि के श्रेणीगण वितरण की प्रवृत्ति परिवर्तनशील रही है। 1975 में क्षेत्र के पूर्वी भाग मे उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व तक सीमा रेखा के सहारे स्थित विकास खण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 75 प्रतिशत से कम था। जब कि मध्य दक्षिणी भाग में रामकोला, मोतीचक, कसया, फाजिलनगर, तमकुही में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत 80 से 85 के मध्य तथा पश्चिमी भाग में 85 प्रतिशत से अधिक था। सर्वाधिक प्रतिशत (हाटा) विकास खण्ड पश्चिमी भाग में ही अवस्थित है। उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत क्रमशः अधिक था। वर्ष 1980 में भी शुद्ध बोये गये क्षेत्र का वितरण ऐसा ही था। परन्तु कुछ विकास खण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक था। इसके बाद 1995 एवं 2018 में शुद्ध बोये गये क्षेत्र की सघनता विरल होती चली गयी। 1975 में 90 प्रतिशत से अधिक शुद्ध बोये गये क्षेत्र वाला एक विकास खण्ड था 1980 में भी यहीं स्थिति रही लेकिन इसके बाद के वर्षो में एक भी विकास खण्ड इस श्रेणी में नहीं रह गया। यह प्रवृत्ति शुद्ध बोये गये क्षेत्र में हास की घोतक है।

85 से 90 प्रतिशत वाली श्रेणी में 1975 में 28.57 प्रतिशत विकास खण्ड थे, जो 1980 में 57. 15 प्रतिशत हो गये। ऐसा 8 विकास खण्डों में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में वृद्धि के कारण हुआ। इसके बाद शुद्ध बोये गये क्षेत्र में कमी के कारण इस श्रेणी में 7.14 प्रतिशत विकास खण्ड ही रह गये। 80 से 85 प्रतिशत वाली श्रेणी में 1975 में 28.57 प्रतिशत विकास खण्ड थे परन्तु 1990 में इस श्रेणी में 64. 29 प्रतिशत विकास खण्ड हो गये। ऐसा शुद्ध बोये गये क्षेत्र में वृद्धि के कारण नहीं अपितु 85 प्रतिशत से अधिक की श्रेणी में आने वाले विकास खण्डों के शुद्ध बोये गये क्षेत्र में कमी के कारण हुआ हैं। पुनः अगले वर्षो में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में ह्रास के चलते इस श्रेणी में विकास खण्डों की संख्या कम हुई, परन्तु 2018 में इसके अन्तर्गत सर्वाधिक 64.29 प्रतिशत विकास खण्ड हो गये। इस श्रेणी में विकास खण्डों की सर्वाधिक संख्या का प्रमुख कारण उच्च श्रेणी वाले विकास खण्डों के शुद्ध बोये गये क्षेत्र में कमी तथा निम्न श्रेणी में आने वाले विकास खण्डों के शुद्ध बोये गये क्षेत्र में वृद्धि के कारण हुआ है।

अति निम्न श्रेणी 75 प्रतिशत से कम के अन्तर्गत विकास खण्डों की संख्या 1975 में 21.43 प्रतिशत थी जो अगले 5 वर्ष (1980) में 7.14 प्रतिशत ही रह गयी। ऐसा शुद्ध बोये गये क्षेत्र में वृद्धि के कारण हुआ। इसके पश्चात शुद्ध बोये गये क्षेत्र में कमी हुई है। फिर भी घट बढ़ की प्रवत्ति विद्यमान रही। इसीलिए इस श्रेणी मं 1995 में 28.57 प्रतिशत, 2005 में 21.43 प्रतिशत एवं 2018 में 7.14 प्रतिशत विकास खण्ड थे।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि वर्ष 1980 तक शुद्ध बोये गये क्षेत्र में वृद्धि की प्रवृत्ति रही और शुद्ध बोया गया क्षेत्र अपनी अधिकतम सीमा तक पहुँच चुका था। उसके बाद कुछ घट बढ़ के साथ शुद्ध बोये गये क्षेत्र में ह्रास हुआ है। शुद्ध बोया गया क्षेत्र जो 1980 में 81.65 प्रतिशत था वह घटकर 2018 में 76.82 प्रतिशत हो गया। इन 38 वर्षों में शुद्ध बोया गया क्षेत्र में 5.74 प्रतिशत (13644 हेक्टेयर) का ह्रास हुआ है। कुल 10 विकास खण्डों में ह्रास एवं 4 विकास खण्ड में किंचित वृद्धि हुई है। कप्तानगंज (1.18 प्रतिशत) एवं सेवरही (1.48 प्रतिशत) में 2 प्रतिशत से कम तथा हाटा (4.38 प्रतिशत) एवं मोतीचक (4.11 प्रतिशत) में 5 प्रतिशत से कम की ही वृद्धि हुई है। जिन 10 विकास

खण्डों में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में वृद्धि हुई है उनमें विशुनपुरा (4.59 प्रतिशत), रामकोला (3.81 प्रतिशत), खड्डा (2.92 प्रतिशत) एवं सुकरौली (0.93 प्रतिशत) में 5 प्रतिशत से कम का ह्रास हुआ है। जबकि कसया विकास खण्ड में सर्वाधिक 22.7 प्रतिशत कमी आयी है। तमकुही (13.58 प्रतिशत), नेबुआ नौरंगिया (13.17 प्रतिशत), दुदही (10.53 प्रतिशत), फाजिलनगर (10.2 प्रतिशत) में 10 से 15 प्रतिशत तक का ह्रास हुआ है।

कुल मिलाकर उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि शुद्ध कृषित भूमि अपनी उच्चतम सीमा तक बढ़ने के उपरान्त अब ह्रासोन्मुख है, जो भूमि उपयोग गत्यात्मकता की चौथी अवस्था का द्योतक है, क्योंकि गैर कृषि कार्यों का विस्तार प्रायः कृषि भूमि पर ही हो रहा है (ब्रजभूषण सिंह, 1979, पृ0–106)। साथ ही कृषि भूमि में विस्तार के लिये सम्भावित संवर्गों यथा कृय बंजर, चरागाह, वन भूमि के अन्तर्गत भूमि में पर्याप्त ह्रास हो चुका है और सम्प्रति इनके अन्तर्गत अत्यल्प भूमि ही शेष है। इस प्रकार गैर कृषि कार्यों में कृषि भूमि के अन्तरण के फलस्वरूप आगामी वर्षों में शुद्ध कृषित भूमि/शुद्ध बोयी गयी भूमि की स्थिति ह्रासमान ही रहेगी। अतः कृषित भूमि को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने का सार्थक प्रयास अत्यन्त आवश्यक है। चूँकि अब कृषिगत भूमि में वृद्धि की सम्भावनाएँ नगण्य हैं। अतः कृषिगत उत्पादकता में अभिवृद्धि के लिए कृषिगत गहनता, प्रति हेक्टेयर उत्पादकता एवं कृषि विविधीकरण को प्रश्रय देना अपरिहार्य है।

संदर्भ

1. Giri, Harihar. (1976). Land Utilization Survey: Distt. Gonda. Shivalaya Prakashan: Gorakhpur, India. Pg. **9.**
2. Singh, Jasbir. (1974). An Agricultural Atlas of India: A Geographical Analysis. Vishal Publications: Kurukshetra. Pg. **105.**
3. Vennzetti, C. (1972). Land Use and Natural Vegetation in International Geography. Edited by W. Peter Adams & Fredrick M. Melleiner, Toronto.
4. खुल्लर, डी0आर0. (2015). भारत का भूगोल. McGraw Hill Education (India) Pvt.Ltd.: New Delhi. Pg. **545.**